तुलसी राम कथा
भरत-भेंट
Gandhi Smarak Nidhi
Karnatak Shakha
138, NEHRU CIRCLE
BANGALORE-3.
O152,1TUL
W3N58
H.000780

तुलसी-राम-कथा—५

भरत-भेंट

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

तुलसीदासजी के 'रामचरित-मानस'
के आधार पर
भगवान राम की
सरस एवं रोचक कहानी

सत्साहित्य प्रकाशन

१९५७

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली
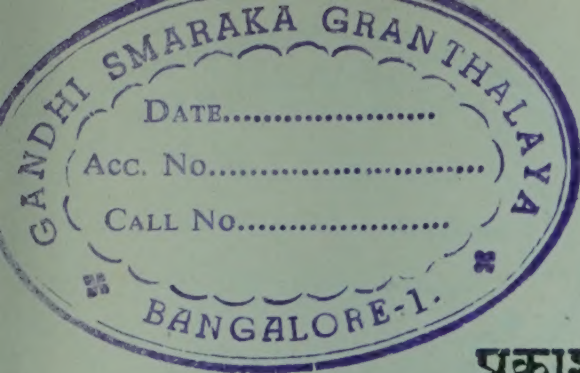
प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा; क्या शहरी, क्या ग्रामीण; सभी राम का नाम सुनकर गद्गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम-कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी इन्हें आसानी से समझ सकें और उसमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर यह पुस्तक-माला निकाली गई है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रम-बद्ध घटनाएं लेकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी दे दिये गए हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुंचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गए हैं।

—मंत्री

विषय-सूची

भरत-भेंट

: १ :

निषाद-मिलन

राम बन की ओर चले तो प्रजा भी उनके साथ चल पड़ी। राम के बहुत समझाने पर भी कोई लौटने को तैयार न हुआ। तमसा नदी के किनारे सबने विश्राम किया और जब प्रजा सो रही थी राम, लक्ष्मण और सीता रथ पर बैठकर वहां से निकल चले। प्रातःकाल प्रजा शोक मनाती हुई अयोध्या लौट आई। राम शृंगबेरपुर पहुंचे। जिस समय निषाद को राम के आने का समाचार मिला तो वह बंधु-बांधवोंसहित भेंट लेकर राम के स्वागत को आया।

यह सुधि गुह निषाद जब पाई।
मुदित लिये प्रिय बंधु बुलाई॥
लै फल फूल भेंट भरि भारा।
मिलन चलेउ हिय हरषु अपारा॥

राम ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया और निषाद ने उनको नगर में पधारने का निमंत्रण दिया। लेकिन राम बोले--

वर्ष चारिदस बासु बन मुनिब्रत वेषु अहारु।
ग्रामवासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु॥

--मुझे चौदह वर्ष तक वन में रहना है, मुनियों का व्रत और

वेष धारण करके वैसा ही भोजन करना है। मुझे नगर में नहीं जाना चाहिए।

यह बात सुनकर निषाद को बहुत दुःख हुआ। गांव के अन्य नर-नारी भी वहां आये और राम के सुंदर रूप को निरखने लगे। स्त्रियां आश्चर्य करने लगीं कि उनके माता-पिता कैसे कठोर हैं, जिन्होंने ऐसे सुंदर बालकों को वन में भेज दिया। पर एक नारी अपनी सखी से बोली, "सखी, राजा ने अच्छा ही किया, जो इन्हें भेजा। ब्रह्मा की कृपा से हमें भी इनको देखने का अवसर मिल गया।"

एक कहहिं भल भूपति कीन्हा।
लोयन लाहु हमहिं विधि दीन्हा।।

रात होने पर राम और सीता भूमि पर ही सोये। लक्ष्मण पहरा देने लगे। यह देखकर निषाद को बहुत दुःख हुआ। सवेरा होने पर राम-लक्ष्मण ने जब अपनी सिर की जटाओं को ठीक किया तो सुमंत का जी भर आया। उसने कहा, "चलते समय राजा ने मुझे आज्ञा दी थी कि दोनों भाइयों को बन दिखाकर और गंगा-स्नान कराकर जल्दी ही वापस ले आना।" इतना कहकर सुमंत बच्चों की तरह रोने लगा और बार-बार राम से अयोध्या लौट चलने की विनती करता हुआ बोला, "हे राम! कृपाकर ऐसा कीजिए, जिससे अयोध्या अनाथ न हो।"

तब राम सुमंत को अनेक प्रकार से समझाने लगे। कहने लगे, "सत्य से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं है। मैं सत्य का पालन करने का निश्चय कर चुका हूं। अब उसे छोड़ूंगा तो धर्म की मर्यादा घटेगी। तुम भी तो मेरे पिता की तरह मेरी भलाई चाहनेवाले हो। मैं हाथ जोड़कर तुमसे यही विनती

करता हूं कि तुम सब तरह से वही काम करना, जिससे पिताजी को दुःख न पहुंचे।"

अंत में सुमंत ने राजा का आखिरी संदेश कह सुनाया। राजा ने कहा था, "सीताजी वन के दुखों को नहीं सह सकेंगी। उन्हें अवश्य ले आना। उनके न आने पर मैं जल के बिना मछली की तरह जी नहीं सकूंगा।"

यह सुनकर राम ने सीता को समझाया और कहा कि वह चाहें तो अब भी लौट सकती हैं। इसपर सीताजी बोलीं,

"हे प्रभु, हे दयालु, आप तो बड़े ज्ञानी हैं। क्या शरीर को छोड़कर छाया कहीं रह सकती है? गरमी सूरज को छोड़कर और चांदनी चंद्रमा को छोड़कर कहां जा सकती है?"

प्रभु करुनामय परम बिबेकी।
तनु तजि रहत छांह किमि छेंकी॥
प्रभा जाइ कहं भानु बिहाई।
कहं चन्द्रिका चंदु तजि जाई॥

यह कहकर सीताजी ने लौटने से इन्कार कर दिया। सुमंत को ही लौटना पड़ा। वह इस प्रकार अयोध्या लौटा, जिस प्रकार व्यापारी अपना सब धन गंवाकर घर लौट आता है।

: २ :

केवट की अनोखी चाह

सुमंत को लौटाकर राम गंगा-तट पर आये और नाव मंगवाई; परंतु केवट नाव नहीं लाया। कहने लगा, "प्रभु मैं आपके भेद को जानता हूं। आपके कमलरूपी चरणों की धूलि में ऐसी शक्ति है

कि वह छूते ही मनुष्य बना देती है। आपने शिला को छूकर सुंदर नारी बना दिया था। मेरी नाव तो पत्थर की भी नहीं, काठ की है। अगर यह नाव मुनि की पत्नी बन गई तो मेरा धंधा ही जाता रहेगा। हे प्रभो, यदि आप पार जाना चाहते हो तो मुझे अपने कमलरूपी चरण धो लेने दो।"

मागी नाव न केवटु आना।
कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥
चरनकमल रज कहुं सबु कहई।
मानुषकरनि मूरि कछु अहई॥
छुअत सिला भई नारि सुहाई।
पाहन तें न काठ कठिनाई॥
तरनिउ मुनिघरनी होइ जाई।
बाट परइ मोरि नाव उड़ाई॥
एहिं प्रतिपालहुं सबु परिवारू।
नहिं जानउं कुछु अउर कबारू॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू।
मोहिं पदपदम पखारन कहहू॥

वह बोला, "मैं आपसे कोई उतराई नहीं लूंगा। आप तो संसाररूपी समुद्र से पार उतारनेवाले हैं। मैं सच कहता हूं, चाहे लक्ष्मण मुझे तीर ही क्यों न मार दें, मैं उस समय तक आपको पार नहीं उतारूंगा जबतक आपके चरण न धो लूं।"

केवट के यह वचन सुनकर रामचन्द्रजी हँसने लगे। बोले, "अच्छा, तुम वही काम करो, जिससे तुम्हारी नाव न जाने पावे। पैर धो लो और जल्दी से हमें पार उतार दो।"

केवट तुरंत काठ के बरतन में जल भरकर ले आया और तब—

वरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं ।
एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

चरण सरोज पखारन लागा

अति आनन्द उमगि अनुरागा ।
चरन सरोज पखारन लागा ।।

देवता पुष्प बरसाकर केवट की सराहना करने लगे कि इसके समान दूसरा कोई पुण्यात्मा नहीं है। केवट आनन्द और प्रेम में भरकर राम के कमलरूपी चरण धोने लगा। उस चरणामृत को उसने स्वयं पिया और अपने सारे परिवार को पिलाया। इस प्रकार अपने पितरों को भी तार दिया। फिर रामसहित सीता और लक्ष्मण को गंगा के पार ले गया।

पद पखारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ ले पार ।।

राम सोचने लगे--केवट को कुछ देना चाहिए, लेकिन उनके पास देने योग्य कोई वस्तु नहीं थी। सीताजी पति के मन की बात समझ गईं और उन्होंने अपनी मणि की अंगूठी उतारकर दी। राम बोले, "केवट, यह अपनी उतराई लो।" केवट ने राम के चरण पकड़ लिये। बोला "हे नाथ, आज मैंने क्या नहीं पाया! मेरे सारे दोष, दुःख और दरिद्रता सब मिट गए। मैं तो बहुत समय से मजूरी कर रहा हूं। आज आपने मुझे पूरी मजूरी दे दी है। मुझे और कुछ नहीं चाहिए, केवल आपकी कृपा मुझपर बनी रहे।"

नाथ आजु मैं काह न पावा ।
मिटे दोष दुख दारिद दावा ।।
बहुत काल मैं कीन्ह मजूरी ।
आज दीन्ह विधि बनि भलि मूरी ।।

राम ने केवट से फिर आग्रह किया कि वह उतराई ले ले, परंतु उसने कुछ नहीं लिया। अंत में राम ने अपनी भक्ति का

पवित्र वरदान देकर उसे विदा किया।

: ३ :

ऋषि-मुनियों के आश्रमों में

चलते-चलते वे तीर्थराज प्रयाग पहुंचे। उस सुंदर प्रयागराज की महिमा का बखान कौन कर सकता है ?

तीर्थराज प्रयाग को देखकर राम बहुत प्रसन्न हुए और उसकी महिमा का बखान करने लगे। वे संगम पर पहुंचे, स्नान किया और फिर शिव की पूजा की। वहां से भरद्वाज मुनि के आश्रम में आगए। उनको देखकर मुनि का हृदय प्रेम से गद्‌गद् होगया। वह अपने जीवन को सफल समझने लगे और--

कुशल प्रस्न करि आसन दीन्हे।
पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हें ॥
कंद मूल फल अंकुर नीके।
दिये आनि मुनि मनहुं अमीके ॥

कुशल-समाचार पूछकर उनको बैठने के लिए आसन दिया। प्रेम के साथ उनका आदर-सत्कार किया। खाने के लिए उत्तम-उत्तम कंद-मूल दिये, जो अमृत के समान मीठे थे। इन्हें खाकर सबकी थकावट दूर होगई और सब बातें करने लगे। मुनि बोले–"आज हमारा तप करना और तीर्थ में रहना सफल हुआ। आज हमारा यज्ञ करना, जप करना और विषयों से दूर रहना सब सफल हुआ। हे राम, आज तुमको देखकर सारे अच्छे कर्मों का फल मिल गया। अब मुझे कोई लाभ या सुख नहीं चाहिए। तुम्हारे दर्शनों से मेरी सब आशाएं पूरी होगई। मुझे आप कृपा

करके यह वरदान दो कि आपके चरण-कमलों में मेरा प्रेम बना रहे।"

मुनि की ऐसी बातें सुनकर राम सकुचाने लगे। वह उनके भक्ति-भाव में डूब गए। बोले, "जिसको आप आदर देते हैं वह सब तरह से गुणवान और बड़ा हो जाता है।"

राम के आने का समाचार पाकर अन्य ब्रह्मचारी, मुनि, तपस्वी, और साधु वहां आ पहुंचे। राम ने उनको प्रणाम किया और उन्होंने प्रसन्न होकर बड़े सुख का अनुभव करते हुए आशीर्वाद दिया। रात को राम ने वहां विश्राम किया। सवेरे स्नान करने के बाद मुनि को प्रणाम करके वे आगे बढ़ने के लिए तैयार होगए। पूछने लगे, "हे मुनि, बताइए हम किस रास्ते से जायं?"

मुनि बोले, "आपके लिए तो सभी रास्ते आसान हैं।"

मुनियों ने अपने शिष्यों में से छांटकर चार को राम के साथ कर दिया। वे राम के साथ-साथ चले; लेकिन राम ने बहुत हठ करके उनको लौटा दिया। राम जिन-जिन गांवों में से होकर जाते वहां के नर-नारी उनके दर्शन के लिए इकट्ठे हो जाते। गांव की स्त्रियां राम को देखकर कलशों में पानी भर लातीं। कहतीं, "हे प्रभु, आप जरा-सा आचमन कर लें।" राम उनके प्रेम को देखकर वट-वृक्ष के नीचे ठहर जाते और थोड़ा विश्राम कर लेते। एक स्थान पर कुछ स्त्रियों ने यह जानने का प्रयत्न किया कि इन तीनों का आपस में क्या रिश्ता है। एक स्त्री सीताजी से कहने लगी—

"हे सुंदर मुखवाली, बताओ तो ये करोड़ों कामदेवों को रिझानेवाले तुम्हारे क्या लगते हैं?"

कोटि मनोज लजावनि हारे ।
सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ।।

सीताजी ने उत्तर दिया--

सहज सुभाय सुभग तन गोरे ।
नामु लखनु लघु देवर मोरे ।
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढांकी ।
पिय तन चितहिं भौंह करि बांकी ।।

--ये जो सीधे स्वभाव और गोरे शरीर के हैं, ये मेरे छोटे देवर हैं। इनका नाम लक्ष्मण है। इसके बाद सीताजी ने चंद्रमा के समान अपने मुख को आंचल से ढक लिया। वह भौंहें टेढ़ीकर अपने पति की ओर देखने लगीं । इस प्रकार इशारे से उन्होंने राम का परिचय दिया। स्त्रियों ने सीताजी को नाना प्रकार से आशीष दी। आगे भी रास्ते में इसी तरह स्त्री-पुरुष मिलते रहे और अपने-अपने मन की बातें कहते रहे। कोई कहती, "राजा ने अच्छा नहीं किया, जो इन कुमार बालकों को बन भेज दिया !" कोई कहती, "राजा बहुत अच्छे हैं, यदि वे इन्हें बन नहीं भेजते तो हम उनके दर्शन कैसे करते !" कोई कहतीं--

ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाये ।
धन्य सो नगरु जहां तें आये ।।

--वे माता-पिता धन्य हैं, जिन्होंने इन्हें पैदा किया ! वह नगर धन्य है, जहां से ये आये हैं !

इस तरह से उस वन में चलते हुए राम चित्रकूट के पास पहुंच गए। रात हो चली थी। सीताजी बहुत थक गई थीं। बड़ के एक पेड़ के नीचे वे सब लोग ठहर गए। रात को वहां आराम किया और सवेरे नित्य-कर्म से छुट्टी पाकर फिर आगे चल

दिये। सुंदर वन, तालाब और पहाड़ियों को देखते हुए वे ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में पहुंचे।

देखत बन सर सैल सुहाये ।
बालमीकि आश्रम प्रभु आये ।।
मुनि कहुं राम दंडवत कीन्हा।
आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा ।।

राम ने मुनि को दण्डवत किया और मुनि ने उनको आशीर्वाद दिया। फिर मीठे-मीठे फल-मूल मंगवाये। राम, सीता और लक्ष्मण तीनों ने फल खाये। वाल्मीकि का मन बड़ा प्रसन्न हुआ। राम के दर्शन पाकर वह गद्गद् हो उठे। उन्होंने राम से चित्रकूट पर निवास करने को कहा।

चित्रकूट गिरि करहु निवासू।
तहं तुम्हार सब भांति सुपासू ।।
सैलु सुहावन कानन चारू ।
करि केहरि मृग बिहग बिहारू ।।

—हे राम, चित्रकूट पहाड़ पर रहो। वहां आपको सब तरह का आराम मिलेगा। सुहावने पर्वत हैं, सुंदर बन हैं। हाथी, सिंह, हिरण और पक्षी सब वहां आनंद से घूमते हैं।

इस प्रकार महामुनि वाल्मीकि ने चित्रकूट की महिमा का वर्णन किया। मंदाकिनी में स्नान करने के बाद राम ने वहीं ठहरने का निश्चय किया। लक्ष्मण ने एक अच्छी-सी जगह देख ली। देवता समझ गए कि राम यहां रहनेवाले हैं। इसलिए वे कुटिया बनाने की तैयारी करने लगे।

कोल किरात वेष सब आये ।
रचे परन तृन सदन सुहाये ।।

कोल-किरातों के वेश में आये हुए देवता कुटिया बनाने लगे।

बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला।
एक ललित लघु एक बिसाला॥

कोल-किरातों का वेष धारण करके वे सब वहां आ पहुंचे। उन्होंने पत्तों और कुशा के तिनकों से एक सुंदर घर बना दिया। उन्होंने दो ऐसी सुंदर कुटिया बनाईं जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। एक कुटिया छोटी थी, दूसरी बड़ी। राम, लक्ष्मण और सीता उन कुटियों में रहने लगे।

: ४ :

दशरथ-मरण

इधर जब केवट अपने स्थान पर लौटा तो सुमंत अभी तक

वहीं ठहरा था। केवट को अकेला देखकर वह रोने लगा। अनेक प्रकार से धीरज बंधाकर केवट ने सुमंत को अयोध्या लौट जाने को कहा। दुखीमन सुमंत अयोध्या लौट गया। उसके रथ को खाली देखकर सारी अयोध्या शोक में डूब गई। नर-नारी विलाप करने लगे। रनिवास व्याकुल हो उठा। राज-महल ऐसा लगने लगा, मानों प्रेतों का स्थान हों। सुमंत ने अंधेरा होने पर ही अयोध्या में प्रवेश किया था। वह चुपचाप महल में चला गया। उसे देखकर रानियां अत्यंत दुखी हुईं और बहुत-सी बातें पूछने लगीं। लेकिन वह कुछ उत्तर नहीं दे सका। वह कौशल्या के महल में पहुंचा। उसने वहां राजा को ऐसे बैठे देखा, मानो बिना अमृत के चंद्रमा हो। वह आभू-षणों से रहित पृथिवी पर बैठे हुए थे। क्षण-क्षण में शोक से छाती भर उठती और बार-बार, 'राम राम', 'हे प्यारे राम' कहते और फिर 'हा राम, हा लक्ष्मण, हा जानकी' कहते !

सुमंत को देखते ही उन्होंने उसे हृदय से लगा लिया तथा स्नेह से पास बैठाकर नेत्रों में जल भरकर पूछने लगे --

राम कुसल कहु सखा सनेही ।
कहं रघुनाथु लखनु वैदेही ।।
आने फेरि कि बनहि सिधाये ।
सुनत सचिव लोचन जल छाये ।।
सोक बिकल पुनि पूछि नरेसू ।
कहु सिय राम लखन संदेसू ।।
राम रूप गुन सील सुभाऊ ।
सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ।।

—हे परम सखा, राम की कुशल कहो। बताओ राम,

लक्ष्मण और सीता कहां हैं ? उन्हें लौटा लाये हो या वे वन को चले गए ?"

यह सुनते ही मंत्री के नेत्र गीले हो गये। शोक से व्याकुल राजा फिर पूछने लगे, "सीता, राम और लक्ष्मण का संदेश तो कहो।" इस प्रकार राम के रूप, गुण, शील और स्वभाव को याद करके राजा सोच करने लगे । मंत्री ने उन्हें समझाया, लेकिन उनपर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब सुमंत ने राजा को बताया कि किस प्रकार केवट ने राम की सेवा की और उन्हें गंगा के पार उतारा। उन्होंने राम का संदेश भी दिया, लेकिन राजा उसी प्रकार तड़पते रहे। कौशल्या समझ गईं कि सूर्य-कुल का सूर्य अस्त हो चला है। उन्होंने पति को बहुत धीरज बंधाने का प्रयत्न किया। प्रिय पत्नी के कोमल वचन सुनकर राजा ने एक बार आंखें खोलीं और रानी को श्रवणकुमार की कथा सुनाने लगे। उसके पश्चात् निरंतर राम का नाम लेते हुए उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। सारे नगर में कोहराम मच गया। सब कैकेई को गालियां देने लगे। सवेरा होने पर मुनि वसिष्ठ वहां आगए। उन्होंने सबको ज्ञान की बातें कहकर शोक दूर करने का प्रयत्न किया। राजा के शव को तेल में रखवाया और दूतों को तुरंत भरत के पास भेजा।

दूतों ने भरत को कुछ भी नहीं बताया। परंतु वह तुरंत उनके साथ लौटे। रास्ते में नाना प्रकार के अपशकुन हो रहे थे। सब कुछ शोभा-हीन था। नगर के स्त्री-पुरुष भी अत्यंत दुःखी थे। केवल कैकेई ही थी, जो भरत को देखकर प्रसन्न हुई। उसने अपने नैहर की कुशल पूछी। कुशल-समाचार सुनाकर भरत पूछने लगे, "पिताजी कहां हैं ? माताएं कहां हैं ? सीता, राम और लक्ष्मण

कहां हैं ?" और जब उन्हें सब बातों का पता लगा तो शोक क मारे बेहाल होगए और 'हा तात' कहते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े। नाना प्रकार से विलाप करने लगे। कैकेई उन्हें धीरज बंधा रही थी; लेकिन भरत सबकुछ जानकर बहुत दुःखी हुए। उन्होंने अपनी माता की बड़ी निंदा की। वह तुरंत कौशल्या के पास पहुंचे और बेसुध होकर उनके चरणों में गिर पड़े। कौशल्या बहुत दुखी हुई और बड़े प्यार से उन्हें समझाने लगी। वसिष्ठजी ने भी आकर भरत को धीरज बंधाया। उनके कहने पर किसी प्रकार उन्होंने राजा का दाह-संस्कार किया, लेकिन राजगद्दी पर बैठने के लिए वह किसी भी तरह तैयार नहीं हुए। उन्होंने राम को वापस लाने के लिए वन में जाने का निश्चय प्रकट किया। उनका यह निश्चय सबको भाया। माताएं भी उनके साथ चलने को तैयार हुईं। उनका विश्वास था कि भरत के समझाने से राम वापस लौट आयंगे। इसलिए वे लोग रथ, हाथी, घोड़े, पालकी, सेना सबकुछ लेकर चलने के लिए तैयार होगए। उन्होंने विश्वस्त सेवकों को नगर सौंपा और वन की ओर चल पड़े।

: ५ :

चित्रकूट में वास

उधर राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट में निवास कर रहे थे। भील-कोल उनके पास आते थे, उनके दर्शन करते थे और प्रसन्न होकर कहते थे--

हम सब भांति करब सेवकाई।
करि केहरि अहि बाघ बराई ॥

बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा।
सब हमार प्रभु पग पग जोहा।।

—हे राम हम सब आपके हैं, आपकी सेवा करेंगे। हम आपको हाथी, शेर, सर्प और बाघों से बचायंगे। हे प्रभु, यहां के भयानक वन, पहाड़ और दर्रे सब अच्छी तरह हमारे देखे हुए हैं।

राम उनकी ये बातें सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। वह केवल उनका प्रेम चाहते थे। वे उनकी बातें ऐसे सुनते थे, जैसे पिता अपने बालकों की बातें सुनते हैं। उन्होंने बड़े प्रेम के साथ उनको विदा किया। उनके वहां रहने से सारे मुनि, देवता और साधु बड़े प्रसन्न हुए।

जबतें आइ रहे रघुनायकु।
तबतें भयउ बनु मंगलदायकु।।
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना।
मंजु बलित बर बलि बिताना।।
जब जब रामु अवध सुधि करहीं।
तब तब बारि बिलोचन भरहीं।।
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई।
भरत सनेहु सीलु सेवकाई।
कृपा सिन्धु प्रभु होहिं दुखारी।
धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी।।

—जबसे राम वन में आकर बसे हैं तबसे वन सबके लिए मंगलमय होगया है। तरह-तरह के पेड़ फलने-फूलने लगे हैं। उनसे लिपटी हुई बेलों से सुंदर मण्डप बन गया है। जब कभी राम अयोध्या की याद करते हैं तो उनकी आंखों में जल भर आता है।

माता-पिता परिजन भाई और भरत का प्रेम और शील तथा सेवा-भाव को याद करके कृपा के समुद्र राम दुःखी हो जाते हैं। लेकिन बुरे दिन समझकर वह धीरज धारण कर लेते हैं। राम की ऐसी दशा देखकर सीता और लक्ष्मण भी बहुत दुःखी होते थे। वे उनको नाना प्रकार से धीरज बंधाते थे। इस प्रकार धीरे-धीरे दिन व्यतीत हो रहे थे ।

उधर भरत सब लोगों के साथ अयोध्या से चलकर तमसा नदी के किनारे आये। रात को विश्राम करने के बाद दूसरे दिन वे गोमती के किनारे पहुंचे। वहां रात को विश्राम किया और अगले दिन श्रृंगवेरपुर पहुंचे। जिस समय केवट को यह पता लगा कि भरत भारी सेना लेकर आये हैं तो उसका मन शंका से भर उठा। सोचने लगा--भरत वन में भी राम से लड़ने आया है और उसने उसको रोकने की तैयारी की।

अस बिचारि गुहं ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।
हथवांसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ।।

होहु संजोइल रोकहु घाटा ।
ठाटहु सकल मरै के ठाटा ।।
सनमुख लोह भरत सन लेऊं ।
जिअत न सुरसरि उतरन देऊं ।।

ऐसा विचार करके उसने अपने जातिवालों से कहा, "सब लोग चौकस हो जाओ। नावों को हाथों में संभाल लो और फिर उनको डुबो दो। सारे घाटों को रोक लो। सब लोग मरने के लिए तैयार हो जाओ। मैं भरत से डटकर लोहा लूंगा। जीते-जी उसको गंगा पार नहीं उतरने दूंगा।"

इन लोगों में एक बूढ़ा आदमी था। उसने समझाया कि बिना

विचारे कोई ऐसा काम न करो, जिससे पीछे पछताना पड़े। उसकी सलाह मानकर केवट भरत से मिलने के लिए चला। उसने बहुत-सी भेंट ली। वह उनके मन की बात जानना चाहता था। उसने मुनि वसिष्ठ को देखकर उन्हें प्रणाम किया। मुनि ने उसको आशीर्वाद देकर सब बातें बताईं और फिर उसे भरत के पास ले गए। कहा, "यह केवट श्रीराम का स्नेही मित्र है।" भरत तुरंत रथ से उतर पड़े। केवट ने अपना नाम, गांव और जाति बताकर उनको दण्डवत् प्रणाम किया।

करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुं लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयं समाई॥

केवट को दंडवत् करते देख उन्होंने उसे छाती से लगा लिया। उनके हृदय में प्रेम नहीं समाता था। उन्हें लग रहा था मानो वह लक्ष्मण से भेंट कर रहे हों। जिस केवट को छोटी जाति का मानकर लोग उससे घृणा करते हैं, भरत ने उसीको छाती से लगा लिया, चूंकि वह राम का भक्त है। उसे राम ने भी तो गले लगाया था।

इस प्रकार भेंट करने के बाद केवट का संदेह दूर होगया। सब लोगों ने गंगा-स्नान किया और रात को भरत ने उसी जगह विश्राम किया, जहां राम ठहरे थे। सवेरे उन्होंने गंगा को पार किया और सबके साथ आगे बढ़े। केवट उनको वे सब स्थान दिखाता जा रहा था, जहां-जहां राम ठहरे थे। उन स्थानों को देखते हुए और उनकी बातें सुनते हुए वे सब लोग प्रयाग पहुंच गए। यहां उन्होंने त्रिवेणी में स्नान किया। इसके बाद भर-द्वाज मुनि के आश्रम में पहुंचे। भरत ने मुनि भरद्वाज को दण्डवत् प्रणाम किया और मुनि उन्हें छाती से लगाकर धीरज बंधाने लगे,

भरत ने मुनि भरद्वाज को दण्डवत् प्रणाम किया ।

"भरत इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। यह सब कर्मों की गति है।" दूसरे दिन वे सब लोग यहां से भी आगे बढ़ गए। भरत की अवस्था देखते ही बनती थी। पैरों में जूते नहीं, सिर पर छाया नहीं। राम के दर्शनों को व्याकुल वह आगे बढ़ रहे थे। वह प्रत्येक उस स्थान पर रुकते थे, जहां राम कुछ देर ठहर चुके थे। वे उसी रास्ते से चित्रकूट पहुंच रहे थे जिस रास्ते से राम गए थे ।

: ६ :

लक्ष्मण का कोप

चित्रकूट में राम और सीता रात बीतने से पहले ही जाग

गए। रात को सीताजी ने एक ऐसा स्वप्न देखा कि भरतजी नगर-निवासियों के साथ वहां आये हैं। प्रभु राम के बिछुड़ने से उनका शरीर दुःख की आग में जल रहा है। सीताजी ने यह स्वप्न श्रीराम को सुनाया। स्वप्न की बात कहती हुई वह बोलीं, "सब लोग मन में उदासीन, दीन और दुःखी हैं। उन्होंने अपनी सासुओं को किसी और ही रूप में देखा है।" इस स्वप्न की बात सुनकर राम की आंखें भर आईं। वह चिंता में पड़ गए और लक्ष्मण से कहने लगे, "भाई, यह स्वप्न तो अच्छा नहीं। ऐसा जान पड़ता है, हम कोई बहुत बुरी खबर सुननेवाले हैं।" इसी समय भील, कोल और किरातों ने आकर समाचार दिया कि एक बड़ी सेना इधर आ रही है। उत्तर दिशा की ओर देखने पर पता चला कि आकाश धूल से भरा पड़ा है। तभी एक और समाचार मिला कि भरत सेना के साथ आ रहे हैं। यह समाचार पाकर राम चकित रह गए और लक्ष्मण क्रोध से भर उठे। वह समझने लगे कि अवश्य यह भरत की ही कोई चाल है।

कहने लगे, "अपने मन में बुरे विचार बनाकर बहुत-से आदमियों को साथ लेकर निष्कंटक राज करने के लिए ये लोग यहां आ रहे हैं। करोड़ों तरह की कुटिलता रचकर दोनों भाई बड़ी भारी सेना लेकर आ रहे हैं। यदि भरत का मन साफ होता तो इतनी बड़ी सेना लेकर क्यों आता ? इसमें भरत का दोष नहीं है। उसे राज्य का मद पागल बना रहा है। लेकिन मैं भी क्षत्रिय हूं। मैंने भी रघुकुल में जन्म लिया है। इसपर मैं राम का सेवक हूं। देखता हूं भरत में कितना बल है!"

आजु राम सेवक जसु लेऊं।
भरतहिं समर सिखावन देऊं।।

राम निरादर कर फलु पाई ।
सोबहुं समर सेज दोउ भाई ।।

—"मैं आज राम का सेवक होने का यश लूंगा । आज मैं भरत को युद्ध-भूमि में शिक्षा दूंगा । राम का निरादर करने का फल चखाऊंगा । वे दोनों भाई आज युद्ध-भूमि में सोयेंगे ।" लक्ष्मण क्रोध में यहांतक कह उठे—

जौं सहाय कर संकरु आई ।
तौ मारउं रन रामदोहाई ।।

—"अगर शंकर भगवान् भी आकर इनका सहयोग करेंगे तो भी मैं इनको युद्ध में मार गिराऊंगा । मुझे राम की सौगंध है ।"

इतने में आकाशवाणी हुई, "जो काम करना चाहिए, वह भली-भांति सोच-समझकर करना चाहिए ।" राम ने भी यही कहा । बोले, "हे लक्ष्मण, भरत-जैसा उत्तम मनुष्य न तो सुना गया है और न देखा गया है । भरत को राज-मद नहीं हो सकता ।"

भरतहिं होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुं कि कांजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ।।

अयोध्या का राज तो क्या, अगर ब्रह्मा, विष्णु, महेश का पद भी उसे मिल जाय तो भी ऐसा नहीं हो सकता । क्या कभी खटाई की बूंदों से क्षीरसागर फट सकता है ?

: ७ :

भरत-मिलाप

राम जब लक्ष्मण को इस प्रकार समझा रहे थे तब भरत

मंदाकिनी नदी में स्नान करने गए। उन्होंने सब लोगों को नदी के किनारे ठहरा दिया और गुरुजनों की आज्ञा लेकर राम के पास चले। उनके साथ केवल केवट ही था। भरत मन में सोचने लगे कि कहीं मेरे आने का समाचार पाकर राम चले न जायं। उनका मन शंकाओं से भर रहा था। तभी केवट ने दूर से ही भरत को राम का निवास-स्थान दिखाया। भरत ने राम की उस कुटिया को प्रणाम किया। फिर दोनों भाई राम के पास पहुंचे। मुनि-मंडली के बीच में सीताजी और रामचंद्रजी ऐसे सुशोभित हो रहे थे, मानो ज्ञान की सभा में साक्षात भक्ति और सच्चिदानंद शरीर धारण करके विराजमान हो रहे हैं। उन्हें देखकर छोटे भाई शत्रुघ्न और सखा निषादराज के साथ उनका मन प्रेम से मग्न हो उठा। वह हर्ष-शोक, सुख-दुःख सब भूल गए। 'हे नाथ, रक्षा कीजिए, हे गुसाईं, रक्षा कीजिए।'—ऐसा कहकर पृथ्वी पर गिर पड़े। उन प्रेम-भरे वचनों को सुनकर लक्ष्मण ने भरत को पहचान लिया और प्रेमसहित पृथ्वी पर मस्तक नवाकर राम से कहा—"हे रघुनाथजी, भरतजी प्रणाम कर रहे हैं।"

उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा।
कहुं पट कहुं निषंग धनु तीरा।।
बरबस लिये उठाइ उर लाये कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान।।

यह सुनते ही रघुनाथजी प्रेम में अधीर हो उठे। कहीं वस्त्र, गिरे, कहीं तरकस, कहीं धनुष और कहीं तीर। उन्होंने भरत को बरबस उठाकर हृदय से लगा लिया। भरत-राम-मिलन को देखकर सब अपनी सुधि-बुधि भूल गए। भरतजी से मिलने के बाद राम शत्रुघ्न से मिले। फिर उन्होंने केवट को गले से

राम ने भरत को बरबस उठाकर हृदय से लगा लिया।

लगाया। भरत और शत्रुघ्न ने मुनियों को प्रणाम किया। सीता के पैरों की रज ली और सबने उनको आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर केवट ने प्रणाम करके राम से कहा—

नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुरलोग।
सेवक सेनप सचिव सब आये विकल वियोग।।

—हे नाथ! मुनिराज वसिष्ठ के साथ सब माताएं, अयोध्या

के नगर-निवासी, सेवक, सेनापति, मंत्री सब आपके वियोग में व्याकुल होकर आपसे मिलने यहां आये हैं।" गुरु और माताओं के आने का समाचार पाकर राम तुरंत उनसे मिलने को चले। शत्रुघ्न को उन्होंने सीताजी के पास छोड़ दिया। मंदाकिनी के किनारे पहुंचकर राम ने सबसे पहले मुनि वशिष्ठ को प्रणाम किया। मुनि ने उनको हृदय से लगा लिया। राम ने अपनी माताओं को बहुत दुःखी देखा।

प्रथम राम भेंटी कैकेई।
सरल सुभायं भगति मति भेई।
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी।
काल करम बिधि सिर धरि खोरी।।

सबसे पहले राम कैकेई से मिले। अपने सरल स्वभाव और भक्ति से उन्होंने कैकेई की बुद्धि को तर कर दिया। राम उसके चरणों में गिरे। काल, कर्म और विधाता का दोष बताकर उन्होंने माता को बड़ी तुष्टि दी। उसके बाद उन्होंने गुरुपत्नी को प्रणाम किया और सब ब्राह्मणों की स्त्रियों की वंदना की। फिर दोनों भाई सुमित्राजी की गोद में जा चिपटे। तब कौशल्याजी के चरणों में गिरे। प्रेम के मारे उनके सारे अंग शिथिल हो रहे थे। बड़े स्नेह से माता ने उन्हें हृदय से लगाया। उस मिलन का वर्णन कैसे किया जा सकता है। फिर ब्राह्मण, मंत्री, माताएं और गुरु आदि चुने हुए लोगों को साथ लेकर वह आश्रम की ओर चले। वहां फिर मिलन-समारोह शुरू होगया। सीताजी ने सबसे पहले मुनि वसिष्ठ के पैर छूकर आशीर्वाद पाया, फिर गुरु-पत्नी अरुंधती से मिलीं। उनका आशीर्वाद पाकर जब सीताजी ने अपनी सासुओं को देखा तो एकाएक सहम कर आंखें बंद कर लीं। ऐसा

मालूम होता था, मानों राजहंसनियां बधिक के वश में पड़ गई हैं। उन्होंने बहुत धीरज धरकर माताओं के चरण छुए। उस समय पृथ्वी पर करुणा-रस की वर्षा होने लगी। स्नेह में भरकर सासुओं ने उन्हें आशीर्वाद दिया, "तेरा सुहाग बना रहे।" इस मिलन-समारोह के बाद महर्षि वसिष्ठ ने राजा दशरथ के स्वर्ग सिधारने का समाचार सुनाया। चारों ओर शोक व्याप्त होगया। राम अत्यंत व्याकुल हो उठे। लक्ष्मण, सीता और सब रानियां विलाप करने लगीं। मुनि वसिष्ठ के बहुत धीरज बंधाने पर राम सारे समाज के साथ मंदाकिनी नदी में स्नान करने के लिए गए। दो दिन तक उन्होंने राजा के मरने का शोक मनाया।

नाथ लोग सब निपट दुखारी।
कन्द मूल फल अंबु अहारी॥
सानुज भरत सचिव सब माता।
देखि मोहि पल जिमि युग जाता॥
सब समेत पुर धारिअ पाऊ।
आपु इहां अमरावति राऊ॥

इसके बाद राम ने गुरु वशिष्ठ से विनती की—"हे नाथ, सब लोग यहां दुखी हो रहे हैं। कंद-मूल फल और जल का ही आहार करते हैं। शत्रुघ्न, भरत, माताओं और मंत्रियों को देखकर एक-एक पल युग के समान जान पड़ता है। इसलिए इन सबको लेकर आप अयोध्यापुरी लौट जाइए। आप यहां और राजा स्वर्ग में हैं, नगरी सूनी है।" राम के ये वचन सुनकर सबको बहुत दुःख हुआ। गुरु बोले—"राम दो दिन और इन सबको दर्शन कर लेने दो।" राम चुप होगए।

: ८ :

राम नहीं लौटे

दो दिन तक और वे सब लोग आश्रम के पास वन-पहाड़ियों को देखते रहे। इसके बाद एक दिन सारा समाज जुटा। गुरु वसिष्ठ चाहते थे कि आगे की बात का निश्चय होजाय। उन्होंने समाज पर यह निर्णय छोड़ दिया कि राम के मन की बात को ध्यान में रखते हुए वे अंतिम निश्चय कर लें। वसिष्ठ कहने लगे--

सब कहुं सुखद राम अभिषेकू।
मंगल मोद मूल मग एकू।।
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ।
कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ।।

--"सबकी भलाई इसीमें है कि राम का राज-तिलक हो। लेकिन सोचने की बात यह है कि राम अयोध्या वापस किस तरह जायं। विचार करके आप सब निर्णय करें।"

भरत ने कहा--"हे मुनिश्रेष्ठ, यह सब मेरे ही कारण हुआ है, मैं ही दोषी हूं।" और उन्होंने गुरु वसिष्ठ को ही कोई उपाय बताने को कहा।

गुरु बोले, "हे तात, मैं एक बात कहने में सकुचाता हूं। इसका एक ही मार्ग है और वह यह कि तुम दोनों भाई वन में रहो और लक्ष्मण सीता के साथ राम लौट जायं।" ये सुंदर वचन सुनकर दोनों भाई बड़े प्रसन्न हुए। भरत बोले--

कानन करउं जनम भरि बासू।
एहि तें अधिक न मोर सुपासू।।

—मैं तो जन्मभर वन में वास करने को तैयार हूं। मेरे लिए इससे बढ़कर कोई सुख नहीं। भरत के ऐसे वचन सुनकर सब लोग बड़े आनंदित हुए। गुरु वसिष्ठ राम को नाना प्रकार से समझाने लगे। बोले, "पहले भरत की विनती सुन लो, फिर उसपर विचार करना। आप साधुमत, लोकमत, राजनीति और वेदों की आज्ञा का निचोड़ निकालकर ही निश्चय कीजिए।" राम ने कहा, "मुझे आपकी सौगंध है और पिताजी के चरणों की दुहाई है। मैं सच कहता हूं कि संसार में भरत-जैसा भाई दूसरा हुआ ही नहीं।"

तब गुरु वसिष्ठ ने भरत से कहा, "तुम संकोच त्याग कर राम से अपने मन की बात कहो।" इसपर भरत बड़ी विनम्रता से सारी बातों का इस प्रकार वर्णन करने लगे कि उनकी बातें सुनकर सब लोग शोक में मग्न होगए। राम ने उन्हें बहुत धीरज बंधाया और कहा कि संकोच त्यागकर जो कुछ कहोगे, मैं वही करूंगा। यह सुनकर सब लोग बड़े प्रसन्न हुए। तब भरत नें साहस करके कहा—

स्वारथु नाथ फिरें सब ही का।
किएं रजाइ कोटि बिधि नीका॥
यह स्वारथ परमारथ सारू।
सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू॥

—हे नाथ, आपके लौटने में सबका स्वार्थ है और आपकी आज्ञा-पालन में करोड़ों प्रकार से कल्याण है। यही स्वार्थ और परमार्थ का सार है। सब पुण्यों का फल और सम्पूर्ण सद्‌गतियों का शृंगार है। आप मुझे शत्रुघ्न-सहित वन में भेज दीजिए और स्वयं अयोध्या लौटकर उसको सनाथ कीजिए। यदि आप न जायं तो लक्ष्मण और शत्रुघ्न को लौटा दीजिए, मैं आपके साथ चलूंगा।

या हम तीनों भाई वन को चले जाते हैं। आप सीताजीसहित लौट जाइए। अपनी जिम्मेदारी मुझपर छोड़िए। न मैं नीति जानता हूं, न धर्म, मैं तो स्वार्थ की बात कह रहा हूं। दुःखी मनुष्य के मन में विवेक नहीं रहता। हे प्रभु, जगत के कल्याण के लिए एक यही उपाय है। आप संकोच त्यागकर जिसे जो आज्ञा देंगे, उसे वह सिर नवाकर स्वीकार करेगा।" भरत के ये पवित्र वचन सुनकर चारों ओर हर्ष छागया, लेकिन राम चुप रहे।

तभी राजा जनक के आने का समाचार मिला। उन्हें सब समाचार मिल चुके थे और वह भी भरत के पीछे-पीछे चित्रकूट

"बेटी, तुमने दोनों कुल पवित्र कर दिये।"

आ पहुंचे। एक बार फिर वह वन मिलन-समारोह के आनंद और करुणा से भर उठा। बहुत देर तक लोग सुख-दुःख की बातें करते रहे। सीता को तपस्विनी के वेष में देखकर जनकजी को बहुत

संतोष हुआ। कहने लगे, "बेटी, तुमने दोनों कुल पवित्र कर दिये।" इस प्रकार कई दिन और बीत गए और तब राम ने सबको लौट जाने को कहा।

एक बार फिर सब लोग इकट्ठे हुए। भरत ने अपने मन की बात कहकर राम से प्रार्थना की, "जो कुछ आप आज्ञा देंगे, मैं वही करूंगा। आज्ञा-पालन के समान श्रेष्ठ स्वामी की और कोई सेवा नहीं है। हे देव, अब वह आज्ञारूपी प्रसाद सेवक को मिल जाय।"

अग्या सम न सुसाहिब सेवा।
सो प्रसादु जन पावै देवा॥

भरत के ऐसे प्रेमभरे वचन सुनकर सब प्रसन्न हुए। राम ने उन्हें हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया। बोले, "हे तात, बुरा अवसर आने पर भाई ही सहयोगी होता है। वज्र का आघात भी हाथ से ही रोका जाता है। इसलिए तुम मेरी सहायता करो। तुम अयोध्या लौट जाओ और राज्य को संभाल लो।" यह सुनकर भरत को परम संतोष हुआ। उन्होंने कहा--

अब कृपाल जस आयसु होई।
करौं सीस धरि सादर सोई॥
सो अवलम्ब देव मोहि देई।
अवधि पारु पावौं जेहि सेई॥

--हे कृपालु, अब जैसी आज्ञा हो, उसीको मैं सिर पर धरकर आदरपूर्वक करूं। परंतु देव, आप मुझे कोई सहारा दें जिसकी सेवा करके मैं इस अवधि को बिता दूं। यह कहकर उन्होंने चित्रकूट के पवित्र स्थानों आदि को देखने की आज्ञा मांगी। राम बोले--"अत्रि ऋषि जैसा कहें वैसा करो और निर्भय

होकर वन में घूमो।"

: ६ :

विदाई

भरतजी ने पांच दिन में सब तीर्थों के दर्शन कर लिये। छठे दिन फिर सारा समाज जुटा और राम ने सबको विदा करने का निश्चय किया। राम ने भरत को अपनी चरण-पादुकाएं दे दीं। भरत ने आदरपूर्वक उन्हें मस्तक से लगा लिया।
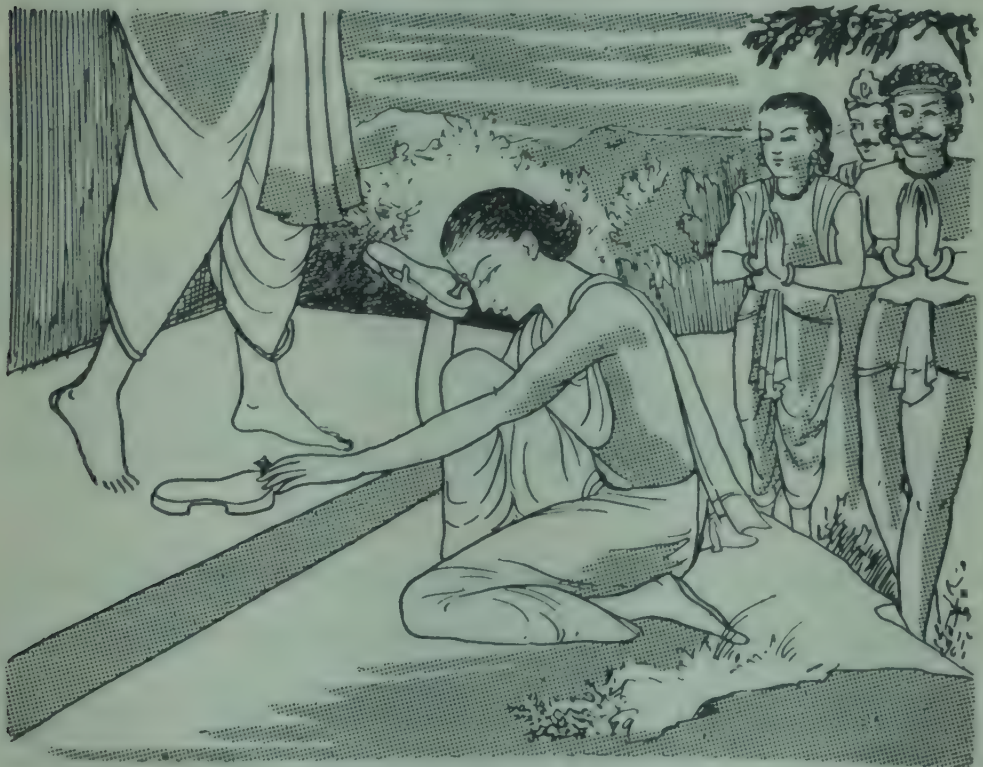
राम की पादुकाओं को भरत ने सादर मस्तक से लगा लिया।

चरन पीठ करुनानिधान के।
जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के॥

सम्पुट भरत सनेह रतन के ।
आखर जुग जनु जीव जतन के ।।

—करुणानिधान राम की दोनों खड़ाऊं प्रजा के चरणों की रक्षा के लिए मानो दो पहरेदार हैं। भरतजी के प्रेमरूपी रतन के लिए मानो डिब्बा हैं और जीव के साधन के लिए मानो राम-नाम के दो अक्षर हैं।

अब भरतजी ने विदा मांगी। श्रीराम ने उन्हें हृदय से लगा लिया। सब लोग फिर वियोग की बात सोचकर दुखी हो उठे। सब लोग बड़े प्रेम से मिले। तन-मन-वचन तीनों से प्रेम उमड़ पड़ा। राम ने भरत की माता कैकेई के चरणों की वंदना करके बड़े प्रेम से उनका संकोच मिटाकर उनको विदा किया।

सीता पहले अपने नेहरवालों से मिलकर लौटीं, फिर उन्होंने सासुओं को प्रणाम किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। दोनों भाई बार-बार माताओं से मिलने लगे। अंत में गुरु वसिष्ठ और गुरु-पत्नी अरुंधति के चरणों की वंदना करके राम सीता और लक्ष्मणसहित पर्णकुटी पर लौट आये। उन्होंने सम्मान के साथ निषादराज को भी विदा कर दिया। वनवासी लोगों को भी लौटा दिया।

उधर भरत ने पहले दिन यमुना को पार किया, दूसरा पड़ाव शृंगवेरपुर में डाला, फिर गोमती में स्नान किया और चौथे दिन अयोध्या जा पहुंचे। चार दिन अयोध्या में रहकर जनकजी लौट गए। नगर के स्त्री-पुरुष गुरु की आज्ञा मानकर अयोध्या में सुखपूर्वक रहने लगे। गुरुजनों के चरणों में सिर नवाकर और प्रभु की चरण-पादुकाओं की आज्ञा पाकर धर्मात्मा भरत भी नंदीग्राम में पर्णकुटी बनाकर रहने लगे। उन्होंने तापस का वेष धारण

किया। सब राज-सुख छोड़ दिये। अनासक्त होकर इस प्रकार रहने लगे, जैसे चम्पा के बाग में भौंरा। वह घर ही में रहकर तप के द्वारा अपने शरीर को कसने लगे।

●

'मंडल' से प्रकाशित धार्मिक व आध्यात्मिक साहित्य

अनासक्तियोग (महात्मा गांधी) ।।।)

श्रीमद्भगवद्गीता का श्लोकसहित अनुवाद ।

गीता-बोध (महात्मा गांधी) ।।)

गीता के प्रत्येक अध्याय का सरल व सुबोध भाषा में कथासार ।

गीता-माता (महात्मा गांधी) ४)

गांधीजी ने गीता के बारे में जो कुछ लिखा है, उस सबका संकलन ।

उपनिषदों का अध्ययन (विनोबा) १)

उपनिषदों का सार ।

स्थितप्रज्ञ-दर्शन (विनोबा) १)

गीता के आदर्श पुरुष स्थितप्रज्ञ के लक्षणों की व्याख्या ।

ईशावास्यवृत्ति (विनोबा) ।।।)

ईशोपनिषद् की विस्तृत टीका, मूल पाठसहित ।

अयोध्याकांड (रामचरित-मानस) १)

मूल, कठिन शब्दों के अर्थसहित ।

तामिलवेद (ऋषि तिरुवल्लुवर) १।।)

दक्षिण के ऋषि के प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए पथ-प्रदर्शक वचन ।

थेरी-गाथाएं (भरतसिंह उपाध्याय) १।।)

बौद्ध भिक्षुणियों के भक्तिमय उद्गार ।

ध्रुवोपाख्यान (घनश्यामदास बिड़ला) ।)

भक्त ध्रुव की सुप्रसिद्ध कथा की नई रोचक व्याख्या ।

बुद्धवाणी (वियोगी हरि) १)

भगवान बुद्ध की चुनी हुई सूक्तियों का विषयवार संग्रह ।

बुद्ध बौद्ध साधक (भरतसिंह उपाध्याय) १।।)

भगवान बुद्ध और उनके अनेक प्रमुख शिष्यों की कथाएं ।

भागवत-धर्म (हरिभाऊ उपाध्याय) ५।।)

प्रस्तुत पुस्तक में भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध का अनुवाद एवं टीका समाज की उन्नति की दृष्टि से जन-सुलभ भाषा में की गई है ।

भागवत-कथा (सूरजमल मोहता) ३।।)

श्रीमद्भागवत के अठारह स्कन्धों की सम्पूर्ण कथा सरल-सुबोध हिन्दी में लेखक ने भक्त पाठकों के लिए उपस्थित की है ।

मनन (हरिभाऊ उपाध्याय) १।।)

आत्मार्थी पाठकों के लिए स्वाध्याय-ग्रंथ ।

तुलसी-राम-कथा की पुस्तकें